दक्षिणी राजस्थान की कला एवं संस्कृति का ऐतिहासिक महत्वः लोक नृत्य गवरी के विशेष संदर्भ में

*राम लाल भील

परिचय

राजस्थानी संस्कृति एक बहती निरा है, जो गांव-ढाणी, चौपाल, पनघट, महल-झोपड़ी, किले-गढ़ी, खेत-खलिहान से बहती हुई जन-जन रूपी सागर के संस्पर्श से इंद्रधनुषीय छटा बिखेरती है और अपनी महक के साथ पर्व-मेले, तीज-त्यौहार, नाट्य-नृत्य, श्रृंगार-पहनावा, रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार आदि में प्रतिबिम्बित होती है। प्राचीन काल से मनुष्य अपने आनंद के क्षणों में प्रसन्नता से झूम कर अंग-भंगिमाओ का अनायास, अनियोजित प्रदर्शन करता रहा है। यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति रही है।

राजस्थान की समृद्ध लोक परंपरा में कई लोक नृत्य एवं लोकनाट्य प्रचलित है। इनमें सब में अनूठा है- "**गवरी लोक नृत्य नाटिका**"। इस नृत्य का प्रचलन दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर, डूंगरपुर, भीलवाड़ा, सिरोही, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ आदि क्षेत्रो में प्रमुखता से होता है। यह भील जनजाति के लोगों द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली एक प्रसिद्ध लोक नृत्य नाटिका है। यह भील जनजाति का नाट्य नृत्यानुष्ठान है, जो सेकड़ो वर्षो से प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा (रक्षाबंधन) के एक दिन बाद प्रारंभ होता है और फिर सवा माह (लगभग 40 दिन) तक अयोजित होता है जो प्रत्येक वर्ष जुलाई, सितंबर (श्रावण व भाद्रपद) में मनया जाता है। गवरी की समाप्ति घड़ावण और वलावण के अनुष्ठानों होती है।

बीजशब्द: गवरीलोक नाट्यराई-बुड़िया घड़ा वणवलावण शिव-पार्वती खडलियो भूत,

खेल्ये आदिवासीबडलिया हिंदवा

लोक नृत्य की उत्पती

गवरी नृत्य की उत्पती के बारे में कई अटकलें हैं, लेकिन इसकी वास्तविक आयु और उत्पति अज्ञात है।

एक परिकल्पना के अनुसार यह 16वीं शताब्दी के अंत में ग्रामीण मेवाड में शुरू हुआ जब 1576 में मेवाडी भीलो ने महाराणा प्रताप का हल्दीघाटी के युद्ध में साथ दिया तब से ये लोग मनोरंजन के लिए नृत्य नाटिका करने लगे और आज भी गवरी का मुख्य आयोजन उदयपुर व राजसमंद जिले में मुख्यतया होता है इसका कारण यह है कि इस खेल का उदभव स्थल उदयपुर माना जाता है तथा आदिवासी भील जनजाति भी इस जिले में बहुतायत से पाई जाती है।

अन्य लोग दावा करते हैं कि गवरी की शुरुआत गुजरात में तीसरी या चौथी शताब्दी में हुई थी। यह भी माना जाता है कि भील संस्कृति चार सहसाब्दी पुरानी है इसलिए यह नृत्यानुष्ठान भी उतना ही पुराना है।

कुछ लोग वल्लभनगर को गवरी का उद्गम स्थल मानते हैं। जो उदयपुर से 25 मील दूर है।

धार्मिक मान्यता के अनुसार गवरी का कथानक भगवान शिवजी के इर्द-गिर्द होता है। गवरी शब्द देवी "**गौरी या पार्वती**" से लिया गया है। जिन्हें भगवान शिवजी की पत्नी माना जाता है और भीलों का मानना है कि अगर वे सभी अनुष्ठान करते हैं तो देवी पार्वती प्रसन्न होंगी और उन्हें आशीर्वाद देगी जिससे वे भविष्य में एक दर्द रहित जीवन जिएगें।

पौराणिक कथानुसार भस्मासुर नाम का एक राक्षस भगवान शिव की पूजा करता है और वरदान मांगता है कि वह किसी भी व्यक्ति के सिर पर अपना हाथ रखे तो वह जलकर भस्म हो जाए। भगवान शिव ने अपने भोलेपन से उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर यह वरदान दे दिया। लेकिन राक्षस ने इस वरदान का दुरूपयोग करना शुरू कर दिया। जिससे कई निर्दोष लोगों की जान चली गई और राक्षस स्वयं भगवान शिव को मारने का प्रयास करता है और भगवान शिव जी स्वयं अपनी रक्षा के लिए भगवान विष्णु के पास जाते हैं तो भगवान विष्णु इस अत्याचार को रोकने के लिए एक सुंदर मोहीनी का रूप धारण करते हैं और राक्षस को विभिन्न क्रिडाओ में उलझा कर स्वयं का हाथ उसके सिर पर रखवा दिया जाता है जिससे वह जलकर भस्म हो जाता है। इस तरह गवरी का त्यौहार शुरू हुआ और भील समुदाय हर साल इस त्यौहार को एक भव्य उत्सव के रूप में मनाते है।

नायक/कलाकार

गवरी लोक नृत्य नाटिका में मुख्य रूप से चार प्रकार के पात्र होते हैं- मानव, देवता, दानव और पशु। गवरी में इन पात्रो की भूमिका पुरुष ही विशिष्ट प्राचीन कहानियो को चित्रित करने की भूमिका निभाते हैं।

मानव पात्र जो गवरी में छोटी-छोटी लघु नाटिकाओ के माध्यम से प्रदर्शन किया जाता है:- राई भूडिया, राईमाता, कुटकडिया, कांजर-कंजरी, मीना, बंजारा-बंजारी, दाणी, नट, खेतूडी, शंकरिया, कालबेलिया, कान-गुजरी, भोपा, फत्ता-फत्ती।

देवता आदर्शों के प्रतीक है। भगवान शिव और पार्वती मनुष्यो में प्रवेश करते हैं तथा उनकी सहायता करते हैं, दुख पीड़ितों को शांति देते हैं, और दुखों को कम करने की कोशिश करते हैं। शिव अपनी अलौकिक शक्ति से उनके कार्यों को पूर्ण करने में मदद करने के लिए वरदान देते हैं।

दानव का चरित्र क्रुर, दुखद और परेशान करने वाले हैं उसके सिर पर सिंग होते है। और इनकी उपस्थिति भयानक और अशुभ होती है। खडलियो भूत, भियॉवड (हटियो, आदि दानव पात्र होते है।

पशु पात्र हिंसक और क्रूर नहीं होते हैं इनमें सूअर, भालू और शेर प्रमुख हैं।

वाद्य यंत्र

गवरी का मुख्य वाद्य यंत्र "**मांदळ**" होता है। यह चिकनी मिट्टी व चमडे का बना एक ताल वाद्य यंत्र होता है जो गवरी के समापन के बाद खूंटी पर रख दिया जाता है। इस मांदळ यंत्र के साथ **कांसे की थाली** भी बजाई जाती है जिसे इस नृत्य के कलाकारों में उत्सुकता आ जाती है। इसमें एक चार-पांच चैन की एक **सांकल** भी होती है। जिसका कभी-कभार उपयोग भोपा के द्वारा किया जाता है। **त्रिशूल** को गवरी मंचन के समय धूणी के पास गाड़ दी जाती है जो शिवजी का प्रमुख हथियार होता है इसके दोनों ओंर दोनों राईमाता खड़ी रहती है।

लोक नृत्य के नियम

गवरी का प्रदर्शन गांव या शहर के खुले स्थान पर प्रातः 9:00 बजे से सांय 6:00बजे तक होता है। कभी-कभी इसका मंचन रात्रि कालीन भी होता है।

इस नृत्य में महिला भाग नहीं लेती है क्योंकि उनमें मासिक धर्म के कारण धार्मिक मान्यता है कि यह नृत्य भगवान शिव, पार्वती तथा भगवान विष्णु को समर्पित होता है इसलिए भील जनजाति इस धर्म में स्त्री के होने से अपनेआराध्य का अपमान मानते है।

जिस गांव में एक बार गवरी का मंचन होता है तो उसके तीसरे वर्ष पुन: उसी गांव में नृत्य किया जाता है।

गवरी के कलाकारों को "**खेल्ये**" कहा जाता है जो सवा माहिने तक वापस अपने घर नहीं जाते हैं। एक समय भोजन करते हैं और नहाते भी नहीं है।

गवरी के खेल्ये सवा माहिने तक स्त्री गमन नहीं करते हैं। मांस मदिरा व हरी सब्जी का भी त्याग करते हैं। जूते भी नहीं पहनते हैं।

अपने घर का भोजन भी नही करते है। जिस गांव या शहर में गवरी का नृत्य होता है उसी गांव के लोग इन्हें भोजन कराते है। और इन्हें पेरावणी देकर विदा करते हैं।

नृत्य का वर्तमान परिपेक्ष्य

वर्तमान समय में गवरी लोक नृत्य विलुप्त होता जा रहा है क्योंकि इसमें कोई अनुभवी कलाकार नहीं रहा और न ही युवा इसके प्रति सजग है। कोई भी परिवार वाले अपने युवा सदस्यो को महिने भर के लिए घर से बाहर जाने पर रोक लगा देते हैं। यह नृत्य किसी अकेले के द्वारा नहीं सिखा जा सकता है क्योंकि गवरी की कोई स्क्रीप्ट या स्कूल नहीं है और इसके अभिनय, कलाओं और कहानियों को सिखने का एकमात्र तरिका प्रतिभागी के रूप में भाग लेना या प्रतिभागियों के साथ समय बिताने पर ही कलाकार बन पाता है।

इसके अलावा रोजगार की तलाश में कामकाजी उम्र के युवाओं का महानगरों की ओर पलायन बढ़ रहा है और ग्रामीण गवरी टोलियों का आकार व संख्या लगातार घट रही है

सकारात्मक पहलू

गवरी नृत्य के मूल्यों को बढावा देने के लिए वर्तमान में भील संगठन भी अधिक सक्रिय हो रहे हैं।

यूनेस्को द्वारा गवरी को वैश्विक रूप से महत्तवपूर्ण अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप मेंमान्यता देनेके लिए पैरवी चल रही है।

यूट्यूब पर गवरी क्लिप की संख्या बढ़ रही है।

उदयपुर के हिरणमगरी सेक्टर 14 पर नगर निगम ने गवरी की पहचान बनाने के लिए "**गवरी चौराहे**" का निर्माण कराया है। इस चौराहे पर गवरी के पात्रो की आदमकद प्रतिमाए लगवायी गई ताकि शहरी लोग भी इनके बारे में जान सकें। साथ ही गवरी लोक नाटिका को लेकर भी यहां शिलालेख लगवाया गया है।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान ने भी मेवाड अंचल के प्रमुख लोक नृत्य की पहचान संपूर्ण राज्य में करने के लिए कक्षा 10 के पाठ्यक्रम में "**राजस्थान का इतिहास और संस्कृति**" के नाम से चलाई इतिहास की पुस्तक में इसे शामिल किया है।

मेवाड के प्रतिष्ठित इतिहासकार और लोक उत्सवों के विशेषज्ञ डॉ श्री कृष्ण जुगनू ने इस प्राचीन लोकनाट्य के बारे में रोचक जानकारी दी है। डॉ महेंद्र भानावत ने "**गवरी**" पुस्तक लिखी। वर्तमान में गवरी का अंग्रेजी भाषा परिचय उपलब्ध है।

शिक्षा विभाग के सहायक निदेशक श्री नरेंद्र टांक का कहना है कि कक्षा 10 में गवरी लोक नृत्य से संबंधित अध्याय शामिल किए जाने से गवरी को प्रादेशिक पहचान मिलेगी। मेवाड के कई स्कूलों में दूसरे अंचल तथा सभांगो के शिक्षक सेवा दे रहे हैं वे भी गवरी के बारे में पूरी जानकारी नहीं रखते हैं। शिक्षा में गवरी को शामिल किए जाने के बाद अब इन्हें इसका अध्ययन तथा अध्यापन आसान होगा।

उदयपुर के पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र ने गवरी कला की फिल्मे और नमूने पेश करना शुरू कर दिया है।

उदयपुर के प्रतिष्ठित कार्यक्रम में 12 ग्रामीण मंडलियो को अलग-अलग दिनों में समारोह करने के लिए आमंत्रित किया गया है। इने आयोजनों ने हजारों पर्यटको और शहर वासियों को पहली बार गवरी से परिचित कराया और मीडिया का ध्यान आकर्षित किया।

दिल्ली में वर्ष 2016 में राष्ट्रीय आदिवासी कार्निवल में पहली गवरी प्रस्तुत की गई जिसमें प्रधानमंत्री श्रीमान नरेंद्र मोदी जी ने भाग लिया तथा इसकी भरपुर प्रशंसा की और प्रोत्साहन दीया।

राजस्थान सरकार ने भी आदिवासियों को प्रोत्साहित करने के लिए 9 अगस्त 2020 को विश्व आदिवासी दिवस पर ऐच्छिक अवकाश के स्थान पर सार्वजनिक अवकाश घोषित किया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार गवरी नृत्य लोक जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके कई महत्व है:-

सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक महत्व

गवरी में प्राकृतिक दुनिया की सुंदरता और शक्ति दिव्यता को प्रदर्शित किया जाता है। गवरी न्यायोचित रूप से समतावादी हैं और अन्यायपूर्ण सत्ता का अनादर करती है। गवरी का भ्रमणशील स्वरूप मेवाड के बिखरे हुए ग्रामीण गांवो के साथ-साथ उनकी जातियो और धार्मिक समुदायो के बीच घनिष्ठ नेटवर्क और एक जुटता को बढ़ावा देती है। इसकी समृद्ध पौराणिक और ऐतिहासिक प्रदर्शन सूची आदिवासी युवाओं को उनकी विरासत के प्रति जागरूक रखने में भी मदद करती है।

कृषि वित्त लालची बिचोलियो और भ्रष्ट व्यापारियों पर गवरी हास्यपूर्ण तरिके से ग्रामीणो को वास्तविक दुनिया का व्यंगात्मक रुप में सबक प्रदान करती है। गवरी अपने भ्रमणशील गावो के दौरे के साथ अंतर सामुदायिक बन्धनों को मजबूत करती है और भीलों को अपने पड़ोस के खेतों से परे दुनिया के लिए जिम्मेदारी की भावना को मजबुत करती है।

प्रकृति संरक्षण का संदेश

गवरी नाटिका मूल रूप से शिव पार्वती की कहानी के इर्द-गिर्द घुमती है, जो प्रकृति के संरक्षण पर जोर देती है। कलाकार गवरी प्रदर्शन कभी भी पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांतों के खिलाफ नहीं करते हैं। गवरी नाटिका सबसे लोकप्रिय प्रदर्शनो में से एक है "**बडलिया हिंदवा**"। जो हर कीमत पर पेड़ों को बचाने के महत्व पर जोर देता है। यह धारणा पर्यावरण की सुरक्षा से संबंधित प्राचीन मान्यताओं में निहित है। भील जनजाति प्रकृति प्रेमी रही है। इनका उद्देश्य जल, जंगल, व जमीन को बचाना है और प्रमुख नारा जय जोहार देते है। अत: गवरी की लघुनाटिकाओ के माद्यम से प्रकृति संरक्षण का संदेश मिलता है।

ऐतिहासिक व धार्मिक महत्व

गवरी की कथानुसार "**देवी गौरजा**" धरती पर आती हैं और धरती पुत्रों को खुश रहने का वरदान देती हैं तथा सभी प्रकार के संकटों से रक्षा करती हैं। भील लोग देवी गौरजा के मंदिर में जाकर पाती मांगते हैं। पाती मांगना एक परंपरा हो गई जो वर्तमान में भी इसका चलन है। जिसमें देवी के सिर पर नीम की पत्तियां डाल दी जाती है। यह नीम की पत्तियां पाती का काम करती है। फिर देवी के सामने थाली रख कर विनती की जाती है। थाली में नीम की पत्ती गिर जाती है तो भील लोग इसे देवी की आज्ञा मानते हैं। इसी आज्ञानुसार अपने जीवन के महत्वपूर्ण कार्य करते है।

गवरी का आयोजन करने का उद्देश्य न केवल मनोरंजन है बल्की मुख्य रूप से यह धार्मिक कर्तव्य का प्रदर्शन है। इसके द्वारा यह बाबा भैरवनाथ (शिव) को प्रसन्न करके गांव व ग्रामीणों को बीमारी, दुःख दर्द, गरीबी व अकाल आदि से सुरक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं।

अत: गवरी लोक नृत्य राजस्थान के मेवाड़ अंचल की भील जनजाति का एक मत्वपूर्ण नृत्यानुष्ठान है।

***शोधार्थी**
जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय,
कोटा (राज.)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान का इतिहास,संस्कृति, परम्परा एंव विरासत- डॉ हुकम चन्द जैन।
2. मा. शि. बोर्ड,राजस्थान कक्षा-10 राजस्थान का इतिहास एंव संस्कृति- डॉ हुकम चन्द जैन, डॉ अरविन्द भास्कर, डॉ एन एल माली।
3. मा शि बोर्ड, राजस्थान कक्षा-9 सामाजिक विज्ञान - डॉ देव कोठारी।
4. मा शि बोर्ड, राजस्थान कक्षा-12 भारत का इतिहास - डॉ के एस गुप्ता, डॉ सतीश कुमार त्रिगुणायत।
5. राजस्थान - श्री धर्मपाल।
6. ग्लोबल हो रहा है मेवाड़ का आदिवासी लोक ओपेरा गवरी- टाइम्स ऑफ इंडिया।
7. राजस्थान राज्य गजेटियर इतिहास और संस्कृति निदेशालय जिला गजेटियर राजस्थान सरकार 1995
8. मुग़ल मेवाड़ संघर्ष-ऐरावत google.com
9. अग्नेय, हरीश 2014 गवरी मेवाड़ का अद्वितीय आदिवासी नृत्य- नाटक एक सचित्र परिचय भारत टेनियर फिल्मस।
10. आरण्य पर्व ने दर्शको को मंत्रमुग्ध कर दिया- कार्यक्रम की समीक्षा@क्रिएनारा।
11. नई दिल्ली में आदिवासी महोत्सव ,मेवाड़ का गवरी नृत्य rajasthanpatrika.com 2017